कलीसिया। अध्याय 11

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। उसकी उपस्थिति और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, उसकी आत्मा के द्वारा परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया के भवन के बारे में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **2 कुरिन्थियों 4-6**

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (2 कुरिन्थियों 4-6) में से अपने शान्त समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके दूसरों के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।

जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करें** (5 मिनट) *[यूहन्ना में पाए जाने वाले मुख्य पद]* **(5) यूहन्ना 4:24**

दो-दो करके ***समीक्षा*** करें।

(5) यूहन्ना 4:24 : परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसियाई उत्सव]* **प्रभु का दिन : विश्राम, संगति और सेवकाई का दिन**

प्रस्तावित करें। "प्रभु का दिन" वो दिन है जिसमें मसीही लोग विश्राम करते हैं व आपस में मिलकर संगति करते हैं, आराधना करते हैं और सेवा करते हैं। हम सीखेंगे कि बाइबल "सब्त के दिन" के बारे में क्या सिखाती है, जिसे *सप्ताह के सातवें दिन* रखा गया था। और हम "प्रभु के दिन" के बारे में सीखेंगे, जो कि बाइबल में *सप्ताह का पहला दिन* होता है। क्यों पूरे विश्व में मसीही लोग आराधना करने के लिए प्रभु के दिन में मिलते हैं? मसीहियों को प्रभु के दिन में क्या करना चाहिए?

सप्ताह के दिनों को अलग-अलग संस्कृतियों में भिन्न-भिन्न तरह से विभाजित किया गया है। पुराने नियम के दिनों में, विश्राम दिन या सब्त का दिन सप्ताह के आखिरी दिन, अर्थात् *सातवें दिन या शनिवार को रखा गया था।* नए नियम के दिनों में मसीहियों ने *सप्ताह के पहले दिन,* प्रभु के दिन को मनाया, *अर्थात् रविवार को।* दुनिया के कई मसीही लोग उनके इसी उदाहरण का पालन करते हैं और रविवार को यानी सप्ताह के पहले दिन, अर्थात् रविवार को परमेश्वर की आराधना करते हैं।

लेकिन ऐसे देशों में रहने वाले मसीही जहाँ परिस्थितियाँ ठीक नहीं हैं वे लोग अपने राष्ट्रीय दिवस के दिन को प्रभु के दिन के रूप में मनाते हैं, जो गुरुवार, शुक्रवार या शनिवार हो सकता है, और ये उनके देश की संस्कृति पर निर्भर करता है। "प्रभु के दिन का उद्देश्य" ज़्यादा महत्व रखता है न की यह कि "किस दिन इसे मनाया जाता है"।

क. पुराने नियम और नए नियम में व्यवस्था

1. पुराने नियम की व्यवस्था।

पुराने नियम की व्यवस्था को निम्नलिखित में विभाजित किया जा सकता है :

(1) नैतिक व्यवस्था।

नैतिक व्यवस्था (निर्गमन 20:1-17; व्यवस्थाविवरण 5:6-21) वह तरीका है जिसमें परमेश्वर चाहता है कि उसके बचाए गए लोग *जीवित* रहें।

(2) औपचारिक व्यवस्था।

औपचारिक या धार्मिक व्यवस्था (नीचे देखें) वह तरीका था जिसमें परमेश्वर ने पुराने नियम की अवधि के दौरान अपने लोगों (विश्वासियों) को *जाने, आराधना करने और उसकी सेवा करने* के लिए कहा था।

(3) नागरिक व्यवस्था।

नागरिक व्यवस्था वह थी जिसमे पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर चाहता था कि पुराने नियम के लोग, इस्राएल एक (ईश्वरीय) राज्य के रूप में कार्य करे। इसमें संपत्ति, उधार लेना और देना, विवाह, मुकद्दमों, गुलामी, युद्ध, हत्या आदि के बारे में कानून शामिल थे (निर्गमन 21:1 से 23:9; व्यवस्थाविवरण 16:18 से 26:19)।

2. पुराने नियम की रीति के अनुसार व्यवस्था।

पुराने नियम की रीति के अनुसार जो व्यवस्था है उसमे आराधना के चार क्षेत्रों के संबंध में नियम और विनियमों का प्रावधान है: पवित्र व्यक्ति, पवित्र स्थान, पवित्र समय और पवित्र क्रियाएँ।

(1) पवित्र लोग

यह व्यवस्था याजकों और लेवियों के लिए थी (निर्गमन अध्याय 28-29, 39; लैव्यव्यवस्था अध्याय 8-10, 21-22, गिनती अध्याय 8)।

(2) पवित्र स्थान

ये व्यवस्था तम्बू और बाद में यरूशलेम में मंदिर के लिए थी (निर्गमन 20:24-26; निर्गमन अध्याय 25-27,30,35-38; लैव्यव्यवस्था 24:1-9; व्यवस्थाविवरण 12)।

(3) पवित्र समय

ये व्यवस्था उपवास के दिन के लिए (लैव्यव्यवस्था अध्याय 16,23:27; गिनती अध्याय 28-29; यशायाह 58:1-12; जकर्याह 8:19 और लूका 18:12 के साथ इसके विपरीत) और अन्य नियुक्त समारोह (निर्गमन) 23:14-19; लैव्यव्यवस्था 23:1-44; व्यवस्थाविवरण 16:1-17), खासकर सब्त के दिन, सब्त के वर्ष और जुबली के वर्ष के लिए थी (निर्गमन 23:10-13; 31:12-17; लैव्यव्यवस्था 25:1-28)।

(4) पवित्र क्रियाएँ

यह व्यवस्था खतना (उत्पत्ति अध्याय 17), शुद्धिकरण की विधि (लैव्यव्यवस्था अध्याय 12-15; गिनती का अध्याय 1 9), शुद्ध भोजन खाना (लैव्यव्यवस्था अध्याय 11,15; व्यवस्थाविवरण 14:3-21), बलिदान चढ़ाना (लैव्यव्यवस्था अध्याय 1-7,22; गिनती 28:1-15), मनुष्य और जानवरों के पहिलौठा और फसल का पहले फल (निर्गमन 13:1-16; गिनती 18:14-20; व्यवस्थाविवरण 15:19-23; तुलना करें : न्यायियों 13:7; 1 शमूएल 1:28) और तीन अलग-अलग प्रकार के दशमांश (लैव्यव्यवस्था 27:30-33; गिनती 18:20-32; व्यवस्थाविवरण 12:17-19; 14:22-29; तुलना करें 16:16-17) के लिए थी।

3. नए नियम की व्यवस्था

(1) नैतिक व्यवस्था को नए नियम में *बनाए* रखा गया है।

मत्ती अध्याय 5 में नैतिक व्यवस्था को सही रीति से समझाया गया है; मत्ती 22:36-40, मरकुस 12:30-31 और रोमियों 13: 8-10; में इसे दोहराया गया; और यूहन्ना 13:34-35 में मसीही जीवन के लिए यह एक मानक है। नैतिक व्यवस्था उसी तरह से रहती है जिस तरह परमेश्वर चाहता है कि उसके बचाए हुए लोग रहें।

(2) औपचारिक व्यवस्था को *पूरा किया गया, रद्द कर दिया गया और तोड़ दिया गया।*

औपचारिक व्यवस्था मसीह के आगमन द्वारा **पूरी हुई** (मत्ती 5:17) और इसलिए **रद्द भी हुई** (कुलुस्सियों 2:14) और इसे **तोड़ भी दिया** गया (समाप्त) (इफिसियों 2:14-15)।

(3) इस्राएल के राष्ट्र-राज्य की नागरिक व्यवस्था की जगह परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों ने ली।

इसे राज्य के विषय में दी गयी यीशु द्वारा शिक्षाओं के साथ बदल दिया गया (मत्ती अध्याय 5,6,7,13 और 18 राज्य के विषय में दिये गये अन्य दृष्टान्तों में भी)। परमेश्वर चाहता है कि जगत के सभी देशों के लोग परमेश्वर के राज्य के नागरिक के रूप में कार्य करें।

4. नया नियम पुराने नियम की औपचारिक व्यवस्था के विभिन्न भागों के बारे में क्या सिखाता है।

(1) पुराने नियम की औपचारिक व्यवस्था नई नियम की *वास्तविकताओं* का *प्रतिरूप* थीं।

पढ़ें कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 8:5,13; 10:1. औपचारिक व्यवस्था के नियम केवल वास्तविक चीज़ों के *प्रतिरूप थे जो होने वाली थीं।* रोमियों, गलातियों और इब्रानियों के नये नियम की पुस्तकों में स्पष्ट रूप से सिखाया गया है कि यीशु मसीह ने पुराने नियम की औपचारिक व्यवस्था को कैसे पूरा किया और स्वयं वास्तविकताओं को प्रगट किया।

(2) पुराने नियम के याजक नए नियम के मसीह और मसीहियों के प्रतिरूप थे।

पढ़ें इब्रानियों 7:23-28। मसीहियों के लिए, उनका एकमात्र *याजक* यीशु मसीह है, क्योंकि वह पूरी तरह से पापरहित और हमेशा के लिए जीवित है। केवल यीशु मसीह ही हमारे अंगीकार का प्रेरित और महायाजक (इब्रानियों 3:1), *चरवाहा* (पासबान) और हमारे प्राणों का रखवाला (शाब्दिक : बिशप) (1 पतरस 2:25), *परमेश्वर के झुण्ड का प्रधान रखवाला* (1 पतरस 5:4) है। नया नियम याजकों के समाज के बारे में बताता है (1 पतरस 2:9-10)।

(3) पुराने नियम का मंदिर नए नियम की कलीसिया का प्रतिरूप था।

पढ़ें इफिसियों 2:21-22 और 1 पतरस 2:4-11 - मसीहियों के लिए, उनका एकमात्र *मंदिर* विश्वासियों का विश्वव्यापी संगठन यानी कि कलीसिया है।

(4) पुराने नियम के सब्त का दिन प्रभु के नये नियम के दिन का प्रतिरूप था।

पढ़ें इब्रानियों 4:1-11

- सप्ताह के सातवें दिन को परमेश्वर के सृजन के कार्य और धरती पर जीवन की शुरुआत के पूरा होने के रूप में मनाया जाता है।
- परन्तु सप्ताह का पहला दिन मसीह में उद्धार के परमेश्वर के कार्य और नए (अनन्त) जीवन की शुरुआत के पूरा होने के उत्सव के रूप में मनाया जाता है।
- मसीहियों के लिए अंतिम सब्त का दूसरा दिन तब आता है जब उनकी मृत्यु होती है और हमेशा के लिए वह परमेश्वर (मसीह) की उपस्थिति में रहते हैं, शुरू में स्वर्ग में और बाद में नई पृथ्वी पर।

पुराने नियम में सब्त के कार्य निम्न थे :

- सप्ताह के एक दिन को दैनिक श्रम से अलग किया गया ताकि उस दिन अपने जी को ठण्डा किया जा सके (निर्गमन 23:12)।
- एक पवित्र सभा में एक साथ मिलना (लैव्यव्यवस्था 23:3)।
- भला करना और प्राण बचाना (मरकुस 3:4)।

इन कार्यों को रविवार के दिन पूरा किया गया, उस दिन जब परमेश्वर ने मसीह के द्वारा अपने उद्धार के कार्य को पूरा किया और पृथ्वी पर नए जीवन की शुरुआत हुई।

(5) पुराने नियम का उपवास नए नियम के आनन्द का प्रतिरूप था।

पढ़ें मरकुस 2:18-22 यूहन्ना 16:19-22 मसीहियों के लिए *विलाप के साथ उपवास* के दिन को हर्ष और कभी भी खत्म न होने वाले आनन्द के दिनों से बदल दिया गया है (जकर्याह 8:19) क्योंकि यीशु मसीह ने उद्धार के लिए आवश्यक हर चीज़ को पूरा किया और लगातार (मत्ती 28:20) वह ऐसा करता रहता है।

(6) पुराने नियम के फसह का पर्व नए नियम के गुड फ्राइडे और प्रभु भोज का प्रतिरूप था।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 5:6-13; 1 कुरिन्थियों 11:18-32 - मसीहियों के लिए, फसह का मेम्ना यीशु मसीह के प्रायश्चित्त का प्रतिस्थापन बलिदान है और वह इस दिन को द्वेष और दुष्टता के पुराने खमीर के साथ नहीं, वरन् ईमानदारी और सत्य की खमीर वाली रोटी के साथ इस पर्व को मनाते हैं (1 कुरिन्थियों 5:7-8)। वे क्रूस पर मसीह की देह और लहू के स्मरण के लिए नियमित रूप से प्रभु भोज के दिन को मनाते हैं (1 कुरिन्थियों 11:24-26)।

(7) पुराने नियम का खतना नये नियम के पुनर्जन्म का प्रतिरूप था।

पढ़ें रोमियों 2:28-29 और कुलुस्सियों 2:11 - मसीहियों के लिए पवित्र आत्मा द्वारा पुनर्जन्म के माध्यम से अपने पापी दिल का *खतना* ही सही मायने में खतना है।

(8) पुराने नियम की शुद्धिकरण की विधि नए नियम में जल के साथ बपतिस्मे का प्रतिरूप थी।

पढ़ें मरकुस 1:8; यूहन्ना 3:22-25; प्रेरितों के काम 10:47-48; प्रेरितों के काम 22:16 - मसीहियों के लिए एकमात्र *शुद्धिकरण की विधि* जल के साथ बपतिस्मा है, जो आत्मा के साथ बपतिस्मा लेने का प्रतीक है (और इस प्रकार मसीह के उद्धार के कार्य के हम भागीदार बनते हैं, जैसे उदाहरण के लिए पापों को धोना या पापों की पूर्ण क्षमा)।

(9) पुराने नियम में केवल (औपचारिक) स्वच्छ भोजन खाना, नए नियम के पवित्र जीवन का प्रतिरूप था।

पढ़ें मरकुस 7:19; 1 तीमुथियुस 4:3-5 - मसीहियों के लिए सभी प्रकार का *भोजन शुद्ध* और खाने के योग्य है। यहूदियों और मुसलमानों के विपरीत, मसीहियों के लिए "शुद्ध या अशुद्ध" भोजन मुद्दा नहीं है, न कि "जो मुँह में प्रवेश करता है," लेकिन "वह चीज़ें जो मुँह और उसके मन से निकलती हैं"! "पर जो कुछ मुँह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योंकि कुचिन्ता, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती है। यही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता" (मत्ती 15:18-20)!

(10) पुराने नियम के बलिदान मसीह के प्रायश्चित के नये नियम के बलिदान का प्रतिरूप थे।

पढ़ें रोमियों 3:25, इब्रानियों 2:17; 9:28; 1 यूहन्ना 4:10 - मसीहियों के लिए, उनका एकमात्र प्रतिस्थापन बलिदान क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु है।

(11) पुराने नियम का पहला जन्म नए नियम में मसीह के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता का प्रतिरूप था।

पढ़ें मत्ती 6:33; लूका 9:23 - मसीहियों के लिए न केवल *पहिलौठा* (जानवरों का और फसल का पहला फल), परन्तु सब कुछ परमेश्वर द्वारा पवित्र ठहराए गए हैं और उसी को समर्पित (अर्पित) करने के लिए हैं।

(12) पुराने नियम का दशमांश नये नियम में भेंटरुपी बलिदान का प्रतिरूप था।

पढ़ें लूका 6:38; 2 कुरिन्थियों 9:6-15 - पुराने नियम में तीन अलग-अलग दशमांश को एक ओर यरूशलेम में याजकों और आराधना को सँभालने के लिए और दूसरी ओर गरीबों के लिए सामाजिक कर के रूप में दिया गया था। मसीहियों के लिए इच्छारूपी और हर्ष द्वारा दिये गये दशमांश को परमेश्वर के राज्य (और विश्वव्यापी कलीसिया) को आगे बढ़ाने के लिए बदल दिया गया।

निष्कर्ष। बाइबिल स्पष्ट रूप से बताती है कि यीशु मसीह ने व्यवस्था को अलग नहीं किया, लेकिन इसे पूरा किया (मत्ती 5:17) और इसे बदल दिया (इब्रानियों 7:12)।

- यीशु मसीह ने नैतिक व्यवस्था को (दस आज्ञाओं) बहाल किया और उसे बरकरार रखा (मत्ती 22:36-40)।
- लेकिन औपचारिक व्यवस्था को इसकी आवश्यकताओं के साथ खत्म कर दिया (कुलुस्सियों 2:14) और इसे मिटा दिया (इफिसियों 2:14-15)।

औपचारिक व्यवस्था को मसीही कलीसिया में फिर से प्रस्तावित नहीं किया जायेगा और इस प्रकार फिर से उन लोगों के बीच विभाजन होंगे, जो औपचारिक व्यवस्था को मानते और जो लोग औपचारिक व्यवस्था को नहीं मानते हैं (इफिसियों 2:14-15)! गंभीर चेतावनी को ध्यान दें : "तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो" (गलतियों 5: 4)!

ख.पुराने और नए नियम में सब्त का दिन

1. सब्त के दिन का पालन करना पुराने नियम में औपचारिक व्यवस्था का एक हिस्सा था।

खोजें और चर्चा करें : सब्त के दिन से परमेश्वर का उद्देश्य क्या था?

(1) पुराने नियम का सब्त - अलग किया गया दिन।

पढ़ें निर्गमन 20:8-11; व्यवस्थाविवरण 5:12-14 - यहोवा ने उन लोगों को जिसने उसे मिस्र की गुलामी से बचाया था दस आज्ञाएँ इसलिए नहीं दी थी ताकि उन नियमों के द्वारा वह लोग बच सकें, परन्तु *इसलिए दी ताकि इन नियमों के*

अनुसार वे परमेश्वर द्वारा बचाए गए लोगों के रूप में जी सकें! इन दस आज्ञाओं की चौथी आज्ञा "सब्त के दिन (सप्ताह का अंतिम दिन) को पवित्र" मानने के सम्बन्ध में है। "पवित्र" शब्द का अर्थ है कि *इस दिन को सप्ताह के दूसरे दिनों से अलग रखना* और *इस दिन उस उद्देश्य को पूरा करना* जिस उद्देश्य के लिए परमेश्वर ने उस दिन को ठहराया था।

(2) पुराने नियम का सब्त - विश्राम दिन।

पढ़ें उत्पत्ति 2:2-3; निर्गमन 23:12 - सब्त के दिन को बाकी के छः दिनों से अलग करने का परमेश्वर का प्रथम उद्देश्य यह था कि मनुष्य इस दिन *विश्राम करे और अपने जी को ठण्डा करे (नयी ऊर्जा प्राप्त करें)*।

(3) पुराने नियम का सब्त - संगति करने का दिन।

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 23:3 सब्त के दिन को बाकी के छः दिनों से अलग करने का परमेश्वर का दूसरा उद्देश्य यह था कि इस दिन पवित्र सभा में *लोग परमेश्वर से और अन्य लोगों के साथ संगति करें।*

इस प्रकार, चौथी आज्ञा सप्ताह के सात दिनों में से एक दिन को विश्राम और जी ठण्डा करने और आराधना और सेवकाई के लिए अलग करने के विषय में सिखाती है।

2. यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने पुराने नियम की व्यवस्था की भावना को बदल दिया था।

खोजें और चर्चा करें। यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने पुराने नियम की व्यवस्था की भावना को कैसे बदल दिया था?

(1) यहूदी धार्मिक अगुवों ने चौथी आज्ञा को बदल दिया।

पढ़ें यशायाह 29:13; मरकुस 2:23-3:6 - पहले से ही यशायाह भविष्यद्वक्ता (740-680 ई.पू.) के समय में इस्राएल के धार्मिक अगुवों ने आराधना की सभी प्रकार की व्यवस्थाओं का निर्माण करना शुरू किया। विशेषकर पुराने नियम की आख़िरी पुस्तक और नए नियम की पहली पुस्तक के बीच 400 साल की अवधि के दौरान, यहूदी धार्मिक अगुवों ने कई *नयी व्यवस्थाओं* का *निर्माण* किया, जिसमें उन्होंने कहा कि ये पुराने नियम की व्यवस्था की उनकी व्याख्या थी।

सब्त शुक्रवार को सूर्यास्त के साथ शुरू होता है और शनिवार के सूर्यास्त के साथ समाप्त हो जाता है। यहूदियों के धार्मिक अगुवों ने सब्त के दिन 39 वर्जित कार्यों की सूची तैयार की। उदाहरण के लिए, सब्त के दिन किसी भी तरह का काम करना मना था; सब्त के दिन यात्रा करना मना था; कि सब्त के दिन, खाना पकाना मना था; या सब्त के दिन कुछ भी लाना मना था, आदि। उन्होंने चौथी आज्ञा तोड़ने के लिए, यीशु के चेलों पर, जो स्वयं यहूदी थे, यह आरोप लगाया, कि वे सब्त के दिन क्यों खाने के लिए अनाज की बालें तोड़ते हैं। "बोना" भी सब्त के दिन मना था। उन्होंने सिखाया था कि लोगों को सब्त का दिन मानने के लिए बनाया गया था। परमेश्वर की व्यवस्था के साथ ऐसी व्यवस्था को जोड़कर यहूदी धार्मिक अगुवों ने व्यवस्था को एक बोझ के रूप में बदल दिया था, जिसे लोग उठा नहीं पा रहे थे। यही कारण है कि यीशु ने कहा, "हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा" (मत्ती 11:28)।

(2) यहूदी धार्मिक अगुवों ने पुराने नियम की व्यवस्था का पूरा अर्थ बदल दिया।

पढ़ें गलातियों 3:25-27; कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 10:1; प्रेरितों के काम 15:1,5; रोमियों 9:30-33; मत्ती 23:3-4 - पुराने नियम की व्यवस्था को वास्तविकता यानी आने वाले उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, की ओर इशारा करते हुए एक प्रतिरूप के रूप में देखने के बजाय, यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने व्यवस्था को औचित्य (उद्धार) के तौर पर बदल दिया! उन्होंने सिखाया कि केवल व्यवस्था का पालन करके एक मनुष्य को बचाया जा सकता है (परमेश्वर की आँखों में उचित)। उनका मतलब न केवल पुराने नियम की व्यवस्था से था, बल्कि विशेषकर उन सैकड़ों व्यवस्था से था जिन्हें उन्होंने बनाया और इस व्यवस्था के साथ जोड़ दिया। वे विशेष रूप से खतना कर रहे थे और सब्त के दिन का पालन उद्धार के लिए अनिवार्य किया (प्रेरितों के काम 15:1)!

परन्तु यहूदी धार्मिक अगुवे ढोंगी थे, क्योंकि वे स्वयं व्यवस्था को नहीं मानते थे, परन्तु वह ये उम्मीद रखते थे कि उनके अनुयायी इन व्यवस्था का पालन करें. "वे कहते तो हैं पर करते नहीं। वे एक ऐसे भारी बोझ को जिन को उठाना कठिन है, बाँधकर उन्हें मनुष्यों के काँधों पर रखते हैं; परन्तु आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते" (मत्ती 23: 3-4)। उन्होंने पुराने नियम की व्यवस्था को असहनीय बोझ में बदल दिया था!

लेकिन बाइबल चेतावनी देती है : "तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो" (गलातियों 5:4)।

(3) यहूदियों के धार्मिक अगुवों ने अपनी परम्पराओं के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं को बदल दिया।

पढ़ें मरकुस 7:1-13 - यीशु ने कहा था कि यहूदियों के धार्मिक अगुओं और शिक्षकों ने परमेश्वर की आज्ञाओं को टाल दिया ताकि वे अपनी मूर्ख रीतियों का पालन कर सकें। उन्होंने पुराने नियम की व्यवस्था को 365 मानव-निर्मित प्रतिबन्धों और 248 मानवनिर्मित आदेशों के तहत दफन किया (कुल 613 पारम्परिक व्यवस्थाओं में)। उन्होंने पुराने नियम की व्यवस्था की उनकी व्याख्याओं का विरोध किया जिन्हें परमेश्वर अपने मुताबिक बनाना चाहता था।

परमेश्वर इन व्यवस्थाओं को ऐसा बनाना चाहता था ताकि आनेवाले उद्धारकर्ता के लिए एक *तैयारी* हो सके और ये उसके उद्धार के कार्य की ओर इशारा कर सकें! उदाहरण के लिए, बलिदान के मेम्ने ने परमेश्वर के मेम्ने द्वारा पाप के प्रायश्चित्त के बलिदान की ओर इशारा किया (2 कुरिन्थियों 5:7)। लेकिन यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने पुराने नियम की व्यवस्था को उद्धार के साधन के रूप में बदल दिया था। उन्होंने यह सिखाया कि व्यवस्था उन्हें परमेश्वर के सामने सही साबित कर सकती है! इसलिए, पापों से उद्धार के लिए किसी उद्धारकर्ता की कोई ज़रूरत नहीं होगी! उन्होंने सिखाया था कि आने वाला मसीहा पापों के लिए उनका एक उद्धारकर्ता नहीं होगा, बल्कि गैर यहूदी राष्ट्रों द्वारा यहूदियों के राजनीतिक दमन से उन्हें बचाएगा और यह कि मसीहा पूरी दुनिया को एक यहूदी राज्य में बदल देगा। बाद में दुनिया के अन्य धर्मों ने व्यवस्था को उद्धार का साधन बनाने में उनकी इस मिसाल का पालन किया। वे सब गलत थे!

3. नए नियम में यीशु द्वारा सब्त का अर्थ।

खोजें और चर्चा करें। यीशु ने सब्त के दिन को किस दृष्टिकोण से देखा?

(1) पुराने नियम में सब्त के दिन को मनुष्यों की सेवा करने के लिए बनाया गया था।

पढ़ें मरकुस 2:18-27; मत्ती 5:4; रोमियों 12:15; 2 कुरिन्थियों 1:3-7 - औपचारिक व्यवस्था केवल भविष्य की वास्तविकता का एक प्रतिरूप था जो यीशु मसीह में पाया जाता है (कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 10:1)। औपचारिक व्यवस्था को *पुराने दाखरस (पुरानी सामग्री) द्वारा पुरानी मशकों (पुराने रूपों) में रखे जाने के रूप में* दर्शाया गया है। मसीह के उद्धार का पूरा काम *नए दाखरस (नई सामग्री) द्वारा दर्शाया गया है जिन्हें नई मश्कों (नए रूपों) में डाला जाएगा (और ऐसा होना भी चाहिए)।*

उदाहरण के लिए : यीशु ने ज़ोर देकर कहा कि जो लोग उसकी उपस्थिति में जी रहे हैं, उन्हें शोक के साथ उपवास करने के बजाय आनन्द के साथ उपवास करना चाहिए। शोक करने की बजाये उन्हें आनन्दित होना चाहिए। यह उत्सव एक आत्मिक उत्सव और एक ऐसा आनन्द है जो हृदय के भीतर मसीह के उद्धार के पूर्ण कार्य और उसकी निरन्तर उपस्थिति के कारण होता है। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि अगर अन्य कोई मसीह दु:खी है तो उसके साथ शोक न मनाया जाये!

अपने पहले आगमन के बाद, यीशु मसीह ने एक नए आदेश (इब्रानियों 9:8-11) की शुरुआत की। वह नयी बातों को अस्तित्व में लाया, अर्थात्, प्रतिरूप की बजाय वास्तविकताओं को और इन नयी वास्तविकताओं के लिए नए रूपों की आवश्यकता है!

उपवास के दिन और सब्त के दिन पुराने आदेश से सम्बन्धित हैं। यीशु ने कहा, "सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये" (मरकुस 2:27)। मनुष्यों के निर्माण के बाद सब्त के दिन का गठन इसलिए नहीं किया गया कि वह उन पर बोझ हो बल्कि इसलिए हुआ ताकि ये दिन मनुष्य के लिए आशीष का दिन ठहरे। इसे इसलिए नहीं बनाया गया कि कम से कम मनुष्य 39 मानवनिर्मित व्यवस्था का पालन करे बल्कि इसलिए बनाया गया ताकि मनुष्य पिछले सप्ताह के अपने दैनिक कामों से विश्राम पा सके और अपने जी को ठंडा करे और उसे परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक पवित्र सभा में अन्य विश्वासियों से मिलने का अवसर मिल सके। यह सब्त के पहले दो उद्देश्य थे।

(2) पुराने नियम में सब्त के दिन को परमेश्वर की सेवा करने के लिए बनाया गया था।

पढ़ें मरकुस 2:28-3:6 - यीशु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।" यहूदियों के धार्मिक अगुवों को सब्त के दिन के लिए व्यवस्था बनाने का कोई अधिकार नहीं है! केवल यीशु मसीह के पास ही यह अधिकार है! उदाहरण के लिए : जब भी दाऊद जैसी परिस्थिति में पड़े लोगों को बचाने की वास्तविक ज़रूरत पड़े (1 शमूएल 21:1-6; 1 शमूएल 22:14-20) या मरकुस 3:4 की तरह लोगों को ठीक करने की आवश्यकता हो तो चौथी आज्ञा (*सातवें दिन पर विश्राम*) के औपचारिक व्यवस्था को अनदेखा किया जा सकता है। यीशु ने कहा, "क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना" (मरकुस 3:4)?

इसलिए सब्त का तीसरा उद्देश्य विशेषरूप से भलाई करके और उन्हें भोजन देकर और उन्हें कपड़े देकर और उन्हें सुसमाचार सुनाकर परमेश्वर की सेवा करना था (मत्ती 11:5)। यीशु की शिक्षा से पता चलता है कि यीशु ने बुद्धिमानी, आत्मिक और रचनात्मक सिद्धान्तों के साथ चौथी आज्ञा (अर्थात् सातवें दिन) के औपचारिक पहलू को बदल दिया है (भला करने और प्राण बचाने के लिए)।

प्रथम मसीहियों ने विशेषरूप से सप्ताह के पहले दिन इन सिद्धान्तों को लागू किया। उन्होंने इसे "प्रभु का दिन" कहा क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने व्यवस्था को (मत्ती 5:17) और सप्ताह के पहले दिन अपने उद्धार के कार्य (पुनरुत्थान और आत्मा को उण्डेलना) को पूरा किया था!

ग. नए नियम में भगवान का दिन

- पुराने नियम में "सब्त के दिन" (सप्ताह के सातवें दिन) ने परमेश्वर के सृजन के कार्य और पृथ्वी पर *जीवन की* शुरुआत (उत्पत्ति 2:1-3) को पूरा किया।
- नए नियम में "प्रभु के दिन" (सप्ताह के पहले दिन) ने परमेश्वर के कार्य (यीशु मसीह में उद्धार) और पृथ्वी पर मसीहियों के लिए नए और अनन्त जीवन की शुरुआत को पूरा किया (लूका 24:1-8)!

प्रभु का दिन मसीहियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इतिहास में होने वाली उद्धार की सभी घटनाएँ सप्ताह के पहले दिन हुई! समय की नई नियम अवधि के दौरान सप्ताह का पहला दिन "एक रविवार था"।

खोजें और चर्चा करें। नए नियम में प्रभु का दिन इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

1. सप्ताह के पहले दिन यीशु मसीह मुर्दों में से जी उठा था।

(1) नया नियम में "प्रभु का दिन" वह दिन है जब मसीह मुर्दों में से जी उठा था।

पढ़ें मत्ती 28:1 - सुसमाचार बहुत स्पष्टरूप से बताता है कि "सब्त के बाद" (सातवें दिन, शनिवार), "सप्ताह के पहले दिन (रविवार) की सुबह", प्रभु यीशु मसीह को मृतकों से पुनर्जीवित किया गया था।

(2) नए नियम में "प्रभु का दिन" वह दिन है जो ये प्रमाणित करता है कि मसीह ने इसी दिन उद्धार का कार्य पूरा किया।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 15:54-57; इब्रानियों 2:14; फिलिप्पियों 2:8-11 - यीशु मसीह का शारीरिक रूप से जी उठना यह साबित करता है कि पाप और मृत्यु और शैतान पर विजय प्राप्त की गई थी! यीशु मसीह का शारीरिक रूप से जी उठना दुनिया के लिए परमेश्वर का प्रमाणीकरण है कि उन्होंने यीशु के पापियों के लिए दिए गए प्रायश्चित्त के बलिदान को स्वीकार कर लिया है और मसीह को सब चीज़ों के ऊपर सर्वोच्च स्थान दिया है।

(3) नए नियम में "प्रभु का दिन" वह दिन है, जो वास्तव में नए नियम में शुरू हुआ।

पढ़ें इब्रानियों 8:6,13, 10:1

- यीशु मसीह की मृत्यु ने पुराने नियम के दर्शन को समाप्त कर दिया।
- यीशु मसीह के पुनरुत्थान के दर्शन की शुरुआत नए नियम में हुई।

नए नियम में मसीह के द्वारा पुराने नियम की छाया (चित्र या प्रकार) और भविष्यद्वाणियाँ और पुराने नियम का उद्धार के कार्य का अन्त हो चुका है! पुराने नियम के सातवें दिन (पुराने नियम के औपचारिक व्यवस्था के भाग के रूप में) को *पूरा किया गया* है और इस तरह इसे *रद्द कर दिया गया* है (खत्म किया गया)। नए नियम में नई वास्तविकताओं का खुलासा किया जा रहा है।

उदाहरण के लिए :

- यीशु मसीह की मृत्यु ने पुराने नियम के पशुओं के बलिदानों को पूरा किया और उसने इनकी जगह ले ली (इब्रानियों 10:8-10)।
- प्रभु भोज ने पुराने नियम के फसह का स्थान ले लिया था, जिसने याद दिलाया कि परमेश्वर ने पापों पर जय पाई है जब उसने प्रायश्चित्त के बलिदान का लहू देखा (1 कुरिन्थियों 11:23-26)।
- खतने की जगह जल से बपतिस्मे ने ली और आत्मा के साथ अदृश्य बपतिस्मा का स्पष्टरूप में और परमेश्वर की दया की वाचा में प्रवेश किया (रोमियों 2:28-29; कुलुस्सियों 2:11-12; गलतियों 3:26-29; तुलना करें : उत्पत्ति 17:7,10-11)।

- मलिकिसिदक के रूप में यीशु मसीह ने स्वर्गीय महायाजक के पद को पूरा किया और पृथ्वी के महायाजकीय हारुन के पद की जगह ली (इब्रानियों 7:11-28)।
- यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाये जाने ने मंदिर के पर्दे की जगह ले ली (मत्ती 27:51) और इस तरह मंदिर और मंदिर की सेवा को पूरी तरह खत्म कर दिया गया (यूहन्ना 2:19-22; कुलुस्सियों 2:14; इफिसियों 2:14-15) और इसे आत्मा और सच्चाई के साथ कलीसिया और उसकी सेवा में बदल दिया गया (यूहन्ना 4:23-24)।
- और परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों ने इस्राएल के मसीही राष्ट्र के नागरिक कानूनों को बदल दिया (मत्ती 5-7; 8:10-12; 13:40-43; 21:42-44)।
- लेकिन ध्यान दें : परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों, इस्राएल को नए नियम की कलीसिया के साथ न ही बदला गया और न ही इसे समाप्त किया गया, लेकिन उच्च स्तर पर इसे जारी रखा गया (जिसमें व्यवस्था और भविष्यद्वाणियाँ अब किसी का प्रतिरूप नहीं थीं, लेकिन वह पूरी हुई और सच्चाई बन गई) और पृथ्वी पर सभी देशों के यीशु मसीह में विश्वास रखनेवालों को शामिल करने के लिए इसका विस्तार (विस्तारित) किया गया (रोमियों 1:16; 10:12-13; इफिसियों 211-22; 3:2-6; 1 पतरस 2:4-10)।
- इसी तरह, प्रभु के दिन (सप्ताह का पहला दिन) को दूसरे दिन से अलग (पवित्र) किया गया और इसे सब्त के दिन (सप्ताह के सातवें दिन) से बदल दिया गया!

पुराने नियम में, सप्ताह के आख़िरी दिन (सप्ताह के सातवें दिन) ने विशेषरूप से परमेश्वर की सृष्टि के अपने कार्य के समापन के दिन के रूप में विशेष महत्व पाया (तुलना करें : उत्पत्ति 2:2-3)। विश्वासियों ने अपने साप्ताहिक काम से विश्राम किया और एक पवित्र सभा में एक साथ संगति की।
नए नियम में, सप्ताह के पहले दिन ने विशेषरूप से परमेश्वर के अपने कार्य (उद्धार) के पूरा होने के दिन के रूप में विशेष महत्व ले लिया (तुलना करें यूहन्ना 19:30; 20:1)! विश्वासी जन परमेश्वर की आराधना करने के लिए, प्रभु भोज के दिन को मानने के लिये, वचन का प्रचार करने के लिये, प्रार्थना करने के लिये, एक दूसरे के साथ संगति करने और कलीसिया के बाहर भले कार्य करने और जीवन को बचाने के लिए एक साथ एकत्रित हुए।

यीशु मसीह का पुनरुत्थान परमेश्वर का ठोस प्रमाण था कि परमेश्वर ने उद्धार के मसीह के पूर्ण (समाप्त) कार्य को स्वीकार कर लिया। यह यीशु मसीह का पुनरुत्थान ही है जिसने सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को इतना महत्वपूर्ण बना दिया।

सब्त के दिन को पवित्र रखने के बारे में चौथी आज्ञा आंशिक रूप से औपचारिक थी और इसलिए सब्त के दिन के पुराने नियम के प्रतीक में बदलाव होना आवश्यक था (तुलना करें : इब्रानियों 7:12 में "व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन")। पुराने नियम के प्रतीक (सातवें दिन) को नए नियम के प्रतीक (सप्ताह के पहले दिन) से बदल दिया गया था।

- सातवें दिन को परमेश्वर द्वारा की गयी सृष्टि की रचना और पृथ्वी पर *जीवन की* शुरुआत के दिन के रूप में मनाया जाता है।
- सप्ताह के पहले दिन को मसीह के *पुन:* (उद्धार) और *अनन्त जीवन* की शुरुआत के दिन के रूप में मनाया जाता है।

इसलिए सप्ताह के पहले दिन को सातवें दिन की तुलना में अधिक महत्व मिला। यह मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा यीशु मसीह की विजय का प्रतीक था! यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान ने पुराने नियम के दर्शन के प्रतिरूप, दृष्टान्त (चित्र), भविष्यद्वाणियाँ और इतिहास को पूर्ण किया, और इस तरह पुराने नियम की समस्त व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं पर विजय प्राप्त की, जिसमें सब्त की आज्ञा के औपचारिक पहलू भी शामिल थे।

2. फिर से जी उठने के बाद यीशु मसीह सप्ताह के पहले दिन लोगों को दिखाई दिया।

पढ़ें मरकुस 16:9-14; यूहन्ना 20:26 - अन्य तथ्य बताते हैं कि नए नियम में सप्ताह का पहला दिन (रविवार) बहुत महत्वपूर्ण है। सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को वह पुनर्जीवित किया गया था।

- यीशु मरियम मगदलीनी को "सप्ताह के पहले दिन" दिखाई दिया (मरकुस 16:9; यूहन्ना 20:11-18)।
- और अन्य महिलाओं को दिखाई दिया (मत्ती 28:9)।
- वह दोपहर के दौरान पतरस को दिखाई दिया (लूका 24:35; 1 कुरिन्थियों 15: 5),
- वह "लगभग संध्या" (लूका 24:29) का समय था जब वह इम्माऊस के रास्ते में मसीह के दो अन्य चेलों को दिखाई दिया।
- वह अपने दस चेलों और उनके साथियों को "सप्ताह के पहले दिन की संध्या को" (लूका 24:33,36; यूहन्ना 20:19)

दिखाई दिया। क्योंकि यूहन्ना का सुसमाचार, संयुक्त सुसमाचार से बहुत बाद में लिखा गया था, यूहन्ना ने यहूदी कैलेण्डर के द्वारा अनुमान नहीं लगाया जिसमें नया दिन सूर्यास्त में शुरू होता है। यह एक मसीही कलीसिया के लिए यीशु मसीह की पहली उपस्थिति थी।

- वह सप्ताह के पहले दिन पर एक हफ्ते बाद भी अपने ग्यारह चेलों को भी (इस समय थोमा के साथ) दिखाई दिया (यूहन्ना 20:26)।

3. सप्ताह के पहले दिन पवित्र आत्मा को उण्डेला गया।

पढ़ें प्रत्येक 2:1; लैव्यव्यवस्था 23:15-16 - *पिन्तेकुस्त के दिन पर पवित्र आत्मा का उतरना भी सप्ताह के पहले दिन (रविवार) पर था।*

4. सप्ताह के पहले दिन नए नियम की कलीसिया की स्थापना की गई थी।

पढ़ें प्रेरितों 2:42 - पहली मसीही कलीसिया यरूशलेम में पिन्तेकुस्त के दिन पर स्थापित की गयी थी। परमेश्वर ने सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को एक बहुत ही ख़ास दिन बनाया, क्योंकि रविवार को यीशु मसीह का पुनरुत्थान हुआ, वह रविवार को अपने शिष्यों को दिखाई दिया, उसने रविवार को अपनी आत्मा को उण्डेल दिया और रविवार को पहली कलीसिया की स्थापना की!

5. सप्ताह के पहले दिन मसीही लोग संगति करते हैं।

(1) यहूदी मसीही सप्ताह के पहले दिन (रविवार) पर एक साथ संगति किया करते थे।

पढ़ें प्रेरितों के काम 2:42; 21:20-21; 1 कुरिन्थियों 9:19-23 - पिन्तेकुस्त के दिन से पहले यहूदियों के बीच के मसीही समुदाय के लोगों ने अन्य यहूदी लोगों के साथ सब्त के दिन (शनिवार) मिलते थे, क्योंकि वे स्वयं को भी यहूदी महसूस करते थे। वे पुराना नियम पढ़ने के लिए, प्रचार करने और प्रार्थना करने के लिए इकट्ठे हुए। हालाँकि नए नियम में कोई भी ऐसा सन्दर्भ नहीं है कि यहूदी मसीहियों ने सातवें दिन प्रभु भोज का दिन मनाया।

लेकिन पिन्तेकुस्त के दिन के बाद से यहूदियों के बीच के मसीही समुदाय के लोगों ने अन्य यहूदियों के अलावा "प्रभु के दिन" (रविवार) को मनाया। एक जगह एकत्रित होकर उन्होंने शास्त्रों को पढ़ा, जिसमें व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं, लेख और सुसमाचार और प्रेरितों के पत्र (2 पतरस 3:1-2, 15-16) शामिल थे, उन्होंने एक साथ मिलकर रोटी तोड़ी और प्रार्थना की (प्रेरितों के काम 2:42)।

(2) सप्ताह के पहले दिन (रविवार) गैर यहूदी मसीही मिलते थे।

पढ़ें प्रेरितों के काम 20:5-12; 1 कुरिन्थियों 16:2 - वे परमेश्वर की आराधना के लिए, प्रभु भोज के लिए, परमेश्वर के कार्यों के बारे में बातचीत करने और भेंट लाने, उपदेश और वचन को सिखाने के लिए एक साथ मिलते थे!

(3) पूरे इतिहास में मसीहियों ने सप्ताह के पहले दिन (रविवार) मिलना जारी रखा।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 1:10 - प्रकाशितवाक्य 1:10 में *प्रभु का दिन,* हमेशा प्रारम्भिक कलीसिया के पिता और आधुनिक यूनानी भाषा के लेखन में सप्ताह के पहले दिन को संदर्भित करता है। इस प्रकार, मसीही समुदाय के लोगों ने सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को संगति करना जारी रखा और उन्होंने इस दिन को "प्रभु का दिन" कहा।

सारांश। इस प्रकार, नए नियम के समय से, सप्ताह का पहला दिन (रविवार) मसीहियों द्वारा आराधना करने, प्रभु भोज के लिये, प्रचार के लिए और परमेश्वर की बातों के विषय में बात करने के लिये ठहराया गया।

केवल कुछ सौ साल पहले, रोमन साम्राज्य के सीजर कॉन्सटैंटाइन ने पूरे रोमन साम्राज्य के लिए सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को आधिकारिक दिन बनाया। पर उसके पास बाइबल द्वारा दिया गया कोई अधिकार नहीं है. क्योंकि यीशु मसीह ने व्यवस्था को पूरा किया था (मत्ती 5:17). अन्य संस्कृतियों में मसीही लोग आराधना या विश्राम के दिन प्रभु का दिन मना सकते हैं, जो सप्ताह के किसी भी दिन हो सकता है। प्रभु के दिन के उद्देश्य का महत्व है या इस बात का कि इसे सप्ताह के किस दिन मनाया जाता है!

घ. यहोवा के दिन का उद्देश्य

परिचय दें। बाइबल में, सप्ताह के सातवें दिन (शनिवार) को "सब्त का दिन" कहा जाता था और सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को "प्रभु का दिन" कहा जाता था। नए नियम में ऐसा कोई निश्चित आदेश नहीं है कि पुराने नियम के

सातवें दिन की तरह (सब्त का दिन) सप्ताह के पहले दिन को ही प्रभु का दिन माना जाये। सप्ताह के पहले दिन (प्रभु का दिन) को पुराने नियम के सातवें दिन (सब्त के दिन) की तरह रखने के लिए नए नियम में कोई स्पष्ट रीति से मना भी नहीं किया गया है। पूरे युग में और सभी देशों में मसीहियों ने सब्त का आत्मा रखा है (निर्गमन 20: 8-11)।

- मसीहियों ने चौथी आज्ञा की बातों में बुद्धिमानी के साथ सिद्धान्तों को बनाए रखा है (विश्राम करने के लिए, जी ठण्डा करने के लिए, संगति करने के लिये, भले कार्य करने के लिए और प्राण बचाने के लिए)
- लेकिन चौथी आज्ञा (सप्ताह के सातवें दिन) के रूप में इसे समाप्त कर दिया और सप्ताह के पहले दिन के साथ इसे बदल दिया!

क्योंकि सप्ताह के पहले दिन को (प्रभु का दिन) पुराने नियम के सातवें दिन (सब्त के दिन) की तरह मानने का कोई स्पष्ट आदेश नहीं है, निम्नलिखित मसीहियों के लिए केवल दिशानिर्देश हैं कि उन्हें इस दिन क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना चाहिए।

1. प्रभु के दिन का उद्देश्य मसीह के उद्धार के कार्य (उसके पुनरुत्थान, पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना और उनकी निरन्तर उपस्थिति) को पूरा करने के लिए खुशी के साथ मनाना है।

2. प्रभु के दिन का उद्देश्य काम से विश्राम करना, आत्मिक रूप से बढ़ना, अन्य मसीही लोगों के साथ सहभागिता और परमेश्वर की आराधना और सेवा करना है।

(1) परमेश्वर से मिलने और धार्मिकता और पवित्रता में आत्मिक रूप से बढ़ने के लिए मसीही लोग "प्रभु के दिन" का उपयोग कर सकते हैं।

पढ़ें यशायाह 56:6-7; यशायाह 58:13-14 - प्रभु के दिन का उद्देश्य यह नहीं है कि आप अपनी ही राह पर चलें और वही करें जो स्वयं को अच्छा लगता हो, लेकिन प्रभु की इच्छा पूरी करने और उसे प्रसन्न करने के लिए इस दिन का प्रयोग करें। मसीहियों को अपनी खुशी का अनुभव करना चाहिए, स्वयं में नहीं, बल्कि प्रभु में। प्रभु के दिन का उद्देश्य परमेश्वर से प्रेम करना, आराधना करना और उसकी धार्मिकता और पवित्रता के साथ सेवा करना है!

(2) "प्रभु के दिन" पर मसीही लोग अन्य मसीहियों के साथ *मिलकर* परमेश्वर से मिल सकते हैं।

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 23:3; प्रेरितों के काम 2:42; 20:5-12; इब्रानियों 10:24-25 - प्रभु के दिन का उद्देश्य एक पवित्र संगति करना है, प्रभु भोज के दिन को मनाना है, परमेश्वर के वचन का प्रचार और उसे सिखाना, एक दूसरे के साथ बाइबल के बारे में बातचीत करना, प्रार्थना करना और एक दूसरे के साथ प्रार्थना करने के लिये संगति और सहभागिता करना है।

(3) मसीही लोग सच्चे रूप से "प्रभु के दिन" पर सक्रिय रूप से भले कार्य और प्राण बचाने के लिये शामिल हो सकते हैं।

पढ़ें मरकुस 3:4; यशायाह 58:6-12; लूका 4:16-21 - प्रभु के दिन का उद्देश्य समय को सिर्फ ऐसे ही व्यर्थ करना नहीं है (काम न करना), लेकिन भला करना और जीवन को बचाना है। उदाहरण के लिए, लोगों को भोजन और कपड़े देने में, उन्हें सुसमाचार का प्रचार करने या उन्हें छुड़ाने (जादूई शक्तियों और झूठी शिक्षाओं से) में सहायता करें।

(4) मसीही अपने दैनिक कार्यों से प्रभु के दिन पर *विश्राम* कर सकते हैं।

पढ़ें निर्गमन 23:12; मरकुस 2:18-27 - प्रभु के दिन का उद्देश्य यह है कि मसीही लोग अपने सामान्य छह दिनों के काम से विश्राम करें और अपने जी को ठण्डा करें। यह एक अच्छा समय है कि मसीही लोग अपने जीवन पर चिन्तन करें, विश्राम करें और अपने परिवार और मित्रों से मिलें। प्रभु के दिन का उद्देश्य मनुष्य पर बोझ डालने के बजाय मनुष्य की सहायता करना है।

3. "प्रभु के दिन" का उद्देश्य हर दिन अनन्तकाल के दृष्टिकोण के साथ जीना है।

पढ़ें इब्रानियों 4:9-11; प्रकाशितवाक्य 14:13 - "परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी है" यह नहीं कहता है : "सब्त के दिन", लेकिन "सब्त का विश्राम"! ये वाक्यांश यह नहीं सिखाता है कि सप्ताह के सातवें दिन को (शनिवार) पुराने नियम के सब्त के विश्राम दिन के रूप में माना जाये। यह अनन्त जीवन के बारे में सिखाता है, जो अभी भी पृथ्वी पर मनुष्यों के सामने है। "सब्त का विश्राम" स्वर्ग या नया स्वर्ग और नई पृथ्वी के लिये एक शब्द है। जब मसीही लोग अपना जीवन और पृथ्वी पर अपना परिश्रम समाप्त कर चुके होंगे, तो वे परमेश्वर में विश्राम पाएँगे और पृथ्वी पर अपने परिश्रम से विश्राम लेंगे (प्रकाशितवाक्य 14:13), जैसे परमेश्वर ने पृथ्वी पर अपने सृष्टि के कार्य से

विश्राम किया!

इस्राएलियों की तरह, अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के द्वारा वे परमेश्वर के सब्त के विश्राम में प्रवेश करने में विफल नहीं होने चाहिए। सिर्फ "प्रभु के दिन" पर ही नहीं, बल्कि अपने जीवन के हर दिन में मसीही लोगों को आनन्द के साथ अनन्त विश्रांति की आशा करनी चाहिए जो परमेश्वर के लोगों के साथ बनी रहती है! यह बताता है कि क्यों प्रभु के दिन के उपयुक्त उद्देश्यों को सप्ताह में किसी एक दिन तक ही सीमित नहीं करना चाहिए। लक्ष्य हैं :

- परमेश्वर से प्रेम करना, उसकी आराधना करना और उसकी सेवा करना।
- एक दूसरे को प्रेम और भले कामों के लिए प्रेरित करने के लिए मसीहियों के रूप में मिलना (इब्रानियों 10:24-25)।
- परमेश्वर के वचन का अध्ययन, चर्चा, प्रचार और सिखाना।
- अच्छे काम करना (गलातियों 6:9-10)।
- प्राण बचाना (मरकुस 3:4)
- चेला बनाना (मरकुस 28:19)

ये गतिविधियाँ सप्ताह के हर दिन के लिए भी हैं!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

आज जो कुछ आपने सीखा है, उसके लिए ***समूह में एक-एक करके परमेश्वर से प्रार्थना करें।***

या समूह को दो या तीन में विभाजित करें और आज जो कुछ आपने सीखा है उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए तैयारी**

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि बनाने दें)।

1. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "प्रभु का दिन : विश्राम, संगति और सेवकाई का दिन" पर प्रचार करें, शिक्षा दें और अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **2 कुरिन्थियों 7 - 10** के अध्यायों को आधा प्रतिदिन पढ़ने के लिए शान्त समय चुन लें।
   सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।
4. याद करना। **यूहन्ना की आयतों की समीक्षा करें** (1) यूहन्ना 1:14; (2) यूहन्ना 1:15; (3) यूहन्ना 2:25; (4) यूहन्ना 3:16; (5) यूहन्ना 4:24 - पहले याद की गई पाँच बाइबल की आयतों की समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें (**यूहन्ना 4)।** बाइबल अध्ययन की पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।